समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

कानपुर मे 'आई लव मोहम्मद' विवाद : मुस्लिम समुदाय का मार्च क्यों बना सुर्खियों मे ?

Sanket Morankar Published on 22 Sep 2025

कानपुर, उत्तर प्रदेश में बीते दिनों एक अनोखा लेकिन विवादास्पद मामला सामने आया है। शहर में मुस्लिम समुदाय के कुछ संगठनों ने "**आई लव मोहम्मद**" लिखे पोस्टर, बैनर और टी-शर्ट पहनकर एक **मार्च (जुलूस)** निकाला। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पैगंबर मोहम्मद के प्रति प्रेम और सम्मान प्रकट करना बताया गया, लेकिन जैसे ही यह खबर सोशल मीडिया और सड़कों पर फैली, यह मामला **विवाद का विषय** बन गया।

- यह मार्च कानपुर के कई इलाकों से गुजरा और इसमें युवाओं की बड़ी संख्या शामिल हुई।
- मार्च में शामिल लोग हाथों में "**आई लव मोहम्मद**" लिखे बैनर और पोस्टर लेकर चल रहे थे।
- कई प्रतिभागी टी-शर्ट और टोपी पर भी यही संदेश लिखवाए हुए थे।
- आयोजकों का कहना था कि इस मार्च का मकसद किसी राजनीतिक संदेश देना नहीं था, बल्कि यह **धार्मिक आस्था और प्रेम की अभिव्यक्ति** थी।

एक आयोजक ने कहा—
"आज के दौर मे जब हमारे धर्म और पैगंबर को लेकर गलत बाते फैलाई जाती है, हम शांति और प्रेम के साथ अपना संदेश देना चाहते है।"

- जैसे ही मार्च की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुईं, इसने **राजनीतिक और धार्मिक बहस** को जन्म दिया।
- कुछ लोगों ने इसे **धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति** बताते हुए समर्थन किया।

- वहीं विरोधियों का कहना है कि यह मार्च **धार्मिक पहचान को सड़कों पर लाने** और माहौल को भड़काने की कोशिश है।
- खासकर विपक्षी दलों और कुछ हिंदू संगठनों ने इस पर सवाल उठाए कि "**क्या ऐसे आयोजन से समाज मे धार्मिक ध्रुवीकरण नहीं होगा ?**"
- कानपुर प्रशासन ने शुरुआत में इस मार्च को **धार्मिक और शांतिपूर्ण कार्यक्रम** मानकर अनुमति दी थी।
- हालांकि विवाद बढ़ने के बाद अधिकारियों ने कहा कि वे इस मामले की **निगरानी** कर रहे हैं।
- पुलिस ने साफ किया कि यदि किसी भी प्रकार का **उकसाने वाला भाषण या गतिविधि** होती है, तो कार्रवाई की जाएगी।

एसपी सिटी ने बयान दिया—
"**शहर मे शांति और सद्भाव बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है। अभी तक मार्च शांतिपूर्ण रहा, लेकिन सोशल मीडिया पर फैल रही भ्रामक खबरों पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है।**"

- भाजपा नेताओं ने कहा कि धार्मिक संदेशों को सार्वजनिक रूप से इस तरह पेश करना **एकतरफा माहौल बनाने** की कोशिश है।
- वहीं समाजवादी पार्टी और कुछ अन्य दलों ने कहा कि संविधान हर नागरिक को **धर्म की स्वतंत्रता** देता है और जब तक कार्यक्रम शांतिपूर्ण है, इसमें आपत्ति नहीं होनी चाहिए।
- AIMIM जैसे दलों ने मार्च का समर्थन करते हुए कहा कि मुस्लिम समुदाय के लोग **पैगंबर मोहम्मद के प्रति प्रेम और श्रद्धा** का प्रदर्शन कर रहे थे, इसमें किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए।
- ट्विटर (X), फेसबुक और इंस्टाग्राम पर इस घटना को लेकर जबरदस्त बहस छिड़ी।
- कुछ यूज़र्स ने लिखा—
  "**आई लव मोहम्मद लिखकर मार्च निकालना किसी को चोट नहीं पहुँचाता, यह सिर्फ आस्था है।**"
- जबकि विरोधी यूज़र्स का कहना था—
  "**अगर दूसरे धर्म के लोग भी सड़कों पर ऐसे मार्च निकाले तो हालात बिगड़ सकते है। सरकार को एक समान नियम लागू करने चाहिए।**"

यह पहली बार नहीं है जब कानपुर में धार्मिक कार्यक्रम ने विवाद खड़ा किया हो।

- 2022 में भी **हिंसक झड़पों और विरोध प्रदर्शनों** की घटनाएं यहां दर्ज हो चुकी हैं।
- यही वजह है कि प्रशासन इस बार खास सतर्क है और लगातार पुलिस बल को चौकसी पर तैनात किया गया है।
- समाजशास्त्रियों का मानना है कि धार्मिक आस्था की अभिव्यक्ति का अधिकार सभी को है, लेकिन जब यह **सार्वजनिक सड़कों और राजनीतिक बहस** का हिस्सा बन जाती है तो विवाद की संभावना बढ़ जाती है।
- एक विशेषज्ञ ने कहा—
  "**अगर ऐसे आयोजन बिना राजनीतिक रंग के किए जाएं तो यह सांप्रदायिक सद्भाव को भी मजबूत कर सकते है। लेकिन अक्सर इन्हे रांजनीतिक लाभ के लिए भुनाया जाता है।**"

- प्रशासन ने संकेत दिया है कि भविष्य में ऐसे धार्मिक आयोजनों को लेकर **कड़े दिशा-निर्देश** बनाए जा सकते हैं।
- आयोजकों से कहा गया है कि यदि वे दोबारा ऐसे मार्च करना चाहते हैं तो पहले से अनुमति लेकर ही करें और सुनिश्चित करें कि किसी भी समुदाय की **भावनाएँ आहत न हों।**

कानपुर में निकला "**आई लव मोहम्मद" मार्च** मुस्लिम समुदाय की आस्था का प्रतीक था, लेकिन इसने समाज और राजनीति दोनों में **नई बहस को जन्म दे दिया।**
जहां समर्थक इसे एक **शांतिपूर्ण धार्मिक अभिव्यक्ति** बता रहे हैं, वहीं विरोधियों के अनुसार यह समाज को **ध्रुवीकरण की ओर** ले जा सकता है।

इस विवाद ने एक बार फिर सवाल खड़ा किया है—
क्या धार्मिक आस्था को **सार्वजनिक प्रदर्शन** का रूप देना सही है, या इसे **व्यक्तिगत और धार्मिक स्थलों** तक ही सीमित रहना चाहिए ?

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.